स्वस्वरूपानुंसंधानरूपी उद्‌गारो ॥

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

स्वस्वरूपानुसंधानरूपी उदुगारो ॥

प्रकाशक–श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य दण्डी स्वामी
श्रीगुरु प्रज्ञानांनन्द सरस्वति तच्छिष्य पूर्णानन्द सरस्वति

स्वस्वरूपानुसंधानरूपी अभ्यासक्रम ॥

यह अभ्यासक्रम अवश्य करके पढना

किसीभी प्रकारकी उपमा रहित अद्वितीय श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य सभी यति वरोंके प्रभुश्री जगत्गुरु श्री शंकराचार्य महाराजकी सेवाके लिये एओश्री और हमारे ईश्वरस्वरूप श्री सदूगुरुकी अंतर्प्रेरणासें स्वबुद्धयानुसार यह छोटा लेख लिखा हे प्रधान कारण एओश्री हि है हम तो निमित्त मात्र है यह स्वानुभवीके उदुगारो काव्य रचना अनुसार नहीं है परंतु ग्रन्थ विस्तारभय और अभ्यासकी अनुकुलता के लिए सूत्ररूपसें लिखा है इस लिए काव्यादि दोष और कोइ व्याकरणादि दोष होवे तो सुधारके पढना परंतु दोष नहीं देखना परंतु इसका रहस्यका विचार करना इसी उदूगारो स्वानुभवीके स्वभाविक (स्वसंवेद्य) है और तीव्र मोक्षेच्छु वर्गको अभ्यास करके प्राप्तकी प्राप्ति करना और यह उदूगारोका उत्तम अधिकारी विवेकादि साधनं संपन्नं शास्त्रविधीपूर्वक सर्व कर्म संन्यास करके विविदिषा संन्यास लिया है ऐसा परमहंस परिव्राजकाचार्य दंण्डीस्वामी हि है और विवेकादि साधन संपन्न जिसके कषाय परिपक्व हुवा है ऐसा मध्यमाधिकारी तीव्रमोक्षेच्छु है उन दोनो अधिकारोओंने आरोपापवाद विधि निषेध मुख अनवय व्यतिरेकादि युक्तिका विचार करके सावधानता उत्साहपूर्वक अपने श्री सदूगुरुश्रीकी मानसी भावनासें वंदन करके मन इन्द्रियोका विषयोमें बाधित वृतिसें देखके वैराग्यको द्रढ करके अभ्यास और वर्त्तन करना और इसी उदूगारो

शब्दानुवेधन सविकल्प समाधिरूप है और पहिले वैखरी वाणीसें ह्रस्व दीर्घ उच्चार सहित पूर्ण प्रेम लगाके नित्य निरंतर अभ्यासकी धून मचाना और यह अभ्यासकी परिसमाप्ति अपना अभ्यासानुसार क्षुधाकी तृप्तिके समान समज लेना इसी उद्गारोंमें पूर्वार्ध उत्तरार्ध दो विभाग है जभी पूर्वार्धकी वासना निवृत्त होवें तभी केवल उत्तरार्धका अभ्यास करना जबी वहभी द्रढ होजाय तभी लयादि दोषोंमें ओर मनोराज्यमें सावधनता पूर्वक मनकी वृत्तिको प्राणकी साथ मिलाके मध्यमां वाणीसें अभ्यास करना वहभी जबी द्रढ होजाय तभी अपना अभ्यासानुसार उद्गारोंका संकोच करके अहं स्वयं ब्रह्म स्वरूपोस्मि या प्रकार ब्रह्माकार वृत्तिको किट भ्रमर न्यायानुसार सोये बैठे खडे चलते ध्यान समाधि सभी समयमें चिंतवन करते रहना और सविकल्प ब्रह्माकार वृत्तिकी द्दढतासें निर्विकल्प ब्रह्माकार वृत्ति होगी और अपना अभ्यासकी तीवृत्तासें अभ्यास द्रढ होनेसें वासनारूपी प्रतिबंध और अपना अंतःकरणका अज्ञानावरण दूर होनेसें जैसे बादल दूर होनेसें सूर्यभगवान आपहि स्वयं प्रकासतें हैं तैसें वह ब्रह्माकार वृत्तिभी विरोधी वृत्तिका अभाव होनेसें आपहि निवृत्त होवेंगे ओर वृत्तिकी विस्मृति होकर निर्विकल्प ज्ञान स्वरूप समाधि होनेपर अपना स्वानुभव स्वरूपका स्वयं अनुभव होवेगा वह अनुभव स्वसंवेद्य है ॥

स्वस्वरूपं स्वयं नमस्कार ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अरे मैत्रेयी आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मनतव्यो निदिध्यासितव्यो ॥ अविनाशी वा अरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा ॥ विज्ञातारमरे केन विजानीयात् ॥ अयमात्माब्रह्म सर्वानुभव स्वरूपोऽस्मि ॥ अहं ब्रह्मेति वाक्यार्थ बोधोयावद्दृढाभवेत ॥ शमादिसहितस्तावदभ्यसेच्छ्रवणादिकम ॥ ब्रह्मात्मा परमात्मा नामवर्जित मनसा वाचा अगम्य विज्ञानघन ब्रह्मानुभव स्वरूपहि अस्नि नेहनानास्ति किंचिन ॥ नान्यत्किंचनमिषत् ॥ इति श्रुतिः ॥

दृष्टिंज्ञानमयीकृत्वा पश्येद् ब्रह्ममयं जगत् ॥

स्वस्वरूपानुसंधानरूपी उद्गारो ॥

॥ अथ ॥

सच्चिदानन्द घन स्वरूपोहंविज्ञान मानन्दं ब्रह्मस्वरूपीस्मि ॥
स्वात्माहि ब्रह्मस्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ अथ सच्चिदानन्द ॥ १

आत्मारूप दर्शनेन ॥ अध्यारोपापवादाभ्यां निष्प्रपञ्च प्रपंच्यते ॥
बोधार्थमेव शिष्याणां तत्व ज्ञैः कल्पितः क्रमः ॥ २
सच्चिदानन्दघन स्वरूपोऽहं विज्ञानमानन्दं ब्रह्म स्वरूपोऽस्मि ॥ (ध्रुवपदम) ३

स्वस्वरूपे ॥ विधि मुखे परोक्षज्ञान निषेध मुखे अपरोक्ष नास्ति ॥
नेति नेति शेषी स्वरूपोऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चिदानन्द॥ ४

स्वस्वरूपे ॥ पञ्च तन्मात्रा आकाशादि महाभूतो दशो दिशाऽपि नास्ति ॥
अविकारोऽहं अक्लेद्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चिदानन्द॥ ५

स्वस्वरूपे ॥ पञ्चपुर अविद्या काम कर्म अष्टपुरी देहोऽपि नास्ति ॥
अविनाशोऽहं यक्लेद्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६

स्वस्वरूपे ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण महा कारण शरीर कल्पना नास्ति ॥
अशरीरोऽहं अदाऽह्योहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ७

स्वस्वरूपे ॥ दशेन्द्रिय मन बुद्धि चित्त अहं सूक्ष्म अहं किंचित् नास्ति ॥
अद्वितीयोऽहं अशोष्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८

स्वस्वरूपे ॥ पञ्च प्राणं सप्त धातु अन्नमयादि पञ्च कोशोऽपि नास्ति ॥
अनिर्देश्योऽहं अभयोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ९

स्वस्वरूपे ॥ शुक्लं कृष्णं रक्त पीतं ह्रस्व दीर्घ अंध वाधिरोऽपि नास्ति ॥
अनन्तरोऽहं अबाह्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ १०

स्वस्वरूपे ॥ क्षुधा पिपासा जन्म मृत्यु शोक मोहादिधर्मोऽपि नास्ति ॥
अजन्मोऽहं अमृत्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ११

स्वस्वरूपे ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तद् धर्म तुर्यावस्थाऽपि किंचित् नास्ति ॥
अनाकारोऽहं असंगोऽहं स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ १२

स्वस्वरूपे ॥ विश्व तैजस प्राज्ञ व्यष्टिशरीराभिमानी जीवोऽपि नास्ति ॥
अनाधारोऽहं अभेद्योऽहं ॥ स्वात्मा ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ १३

स्वस्वरूपे ॥ विराट हिरण्यगर्भ ईश्वर समष्टिकी कल्पना नास्ति ॥
अप्रमेयोऽहं अमूर्तोऽहं स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ १४
स्वस्वरूपे ॥ पञ्च वषय पञ्च कलेप पड् भाव विकार कल्पना नास्ति ॥
अपरोक्षोऽहं अबाध्योऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चि.॥ १५
स्वस्वरूपे ॥ अहं ममं काम क्रोध राग द्वेषादि द्वन्द्वोऽपि किंचित् नास्ति ॥
निरहंकारोहं निर्द्वन्द्वोऽहं स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चि.॥ १६
स्वस्वरूपे ॥ माता पिता वर्णाश्रमाचार धर्म कर्मकी कल्पना नास्ति ॥
अनिरूप्योऽहं अपारोऽहं स्वात्माहिं ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिध्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ १७
स्वस्वरूपे ॥ जप तप तीर्थ भक्ति यज्ञ दान ध्यानादि कल्पना नास्ति ॥
अव्यापारोऽहं अखंडोऽहं स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ १८
स्वस्वरूपे ॥ ज्ञाति नीति कुलगोत्र नाम रूप गुण दाघोऽपि नास्ति ॥
अजरोऽहं अमरोऽहं स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ १९
स्वस्वरूपे ॥ प्रकृति विकृति सत्व रजः तमो गुणोंकी कल्पना नास्ति ॥
विजिघत्सोहं अमृतोऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २०
स्वस्वरूपे ॥ अध्यात्मिक अधिभौतिक अधिदैवी दुःख कल्पना नास्ति ॥
अपिपासोऽहं अच्युतोऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २१
स्वस्वरूपे ॥ क्षराक्षर अधा कर्ता ज्ञान सुखादि धर्म कल्पना नास्ति ॥
अविकारोऽहं अचलोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि २२
सच्चिदानन्द घन स्वरूपोहंविज्ञान मानन्दं ब्रह्मस्वरूपोस्मि

स्वस्वरूपे ॥ विहित निषिद्ध सकाम निस्काम कर्मोंकी कल्पना नास्ति ॥
अविछिन्नोऽहं अकर्मोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २३

स्वस्वरूपे ॥ विधि निषेद्ध मैत्रि करुणादि देवासुर कल्पना नास्ति ॥
अलेपकोऽहं अग्राह्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २४

स्वस्वरूपे ॥ प्रकृति पुरुष क्षेत्रक्षेत्रज्ञ जड चेतन जीवो नास्ति ॥
घनाकारोऽहं अक्षरोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ २५

स्वस्वरूपे ॥ ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्र अग्नि सूर्य चन्द्रादि देवोऽपि नास्ति ॥
चिदाकारोऽहं अव्ययोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २६

स्वस्वरूपे ॥ भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यादि लोक कल्पना नास्ति ॥
निरूपाधीऽहं निष्क्रियोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ २७

स्वस्वरूपे ॥ संसकृत हिन्दी गुजराती भाषा प्रक्रियाकी कल्पना नास्ति ॥
निरंकुशोऽहं निरंशोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ २८

स्वस्वरूपे ॥ कर्ता भोक्ता पुण्य पापं स्वर्ग नर्क बंध मोक्षोऽपि नास्ति ॥
अकर्ताऽहं अभोक्ताऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ २९

स्वस्वरूपे ॥ मल विक्षेप आवरण प्रत्यभिज्ञा अभिज्ञा ज्ञानं नास्ति ॥
निस्कलंकोऽहं निर्ममोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ३०

स्वस्वरूपे ॥ ब्रह्मचर्य ग्रहस्थ वानप्रस्थ संन्यासाऽश्रमोऽपि नास्ति ॥
अप्राणोऽहं अमनोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ३१

अप्राणोऽहं अमनोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ३१

स्वस्वरूपे ॥ प्रतिक सगुण निर्गुण अंहग्रहोपासना किंचित् नास्ति ॥
निर्विकल्पोऽहं निर्मलोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ३२
स्वस्वरूपे ॥ शिक्षा कल्प व्याकरणं निरुक्त छन्दो ज्योतिषोऽपि नास्ति ॥
अलक्षणोऽहं अगोत्रोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ३३
स्वस्वरूपे ॥ नामरूप क्रिया संयुक्त मीथ्या प्रपञ्चोऽपि किंचित् नास्ति ॥
अस्तिभाति प्रियं स्वरूपोऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ३४
स्वस्वरूपे ॥ लोकवासना देहवासना शास्त्रवासनाऽपि किंचित् नास्ति ॥
निर्वासनोऽहं निर्मोहोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ३५
स्वस्वरूपे ॥ पृथ्वी अन्तरीक्ष स्वर्गादि तत्व चतुर्दस भुवन नास्ति ॥
निरालंबोऽहं निर्दोषोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ३६
स्वस्वरूपे आत्माश्रय चक्रिका अनवस्था व्याघातादि दोषोऽपि नास्ति ॥
नित्यमुक्तोऽहं निश्चलोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ३७
स्वस्वरूपे ॥ प्रमाता प्रमाण प्रमेय प्रत्याक्षादि षट प्रमाणोऽपि नास्ति ॥
निरामयोऽहं निर्लेपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ३८
स्वस्वरूपे ॥ आकार उकार मकार अर्धमात्रारूपी ॐकार नास्ति ॥
अमात्रोऽहं अव्यवहारोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ३९
स्वस्वरूपे ॥ देश काल वस्तु परिच्छेद मीथ्या जगत्की कल्पना नास्ति ॥
निराकारोऽहं निस्कामोऽहं॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चि.॥ ४०
सच्चिदानन्द घन स्वरूपोऽहं विज्ञानमानन्दं ब्रह्मस्वरूपोऽस्मि ॥

स्वस्वरूपे ॥ सजातिय विजातिय स्वगतादि भेदकी कल्पना नास्ति ॥
निराश्रयोऽहं निर्मदोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ४१

स्वस्वरूपे ॥ सूर्य चन्द्र अग्नि वाणी विज्ञान ज्योतीकी कल्पना नास्ति ॥
स्वयंज्योती स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४२

स्वस्वरूपे ॥ सोपाधि निरुपाधि संवादि विसंवादी भ्रम किंचित् नास्ति ॥
निर्विशेषोऽहं निर्मानोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चि.॥ ४३

स्वस्वरूपे ॥ असत्वापादक अभानापादक आवरण किंचित् नास्ति ॥
निरावरणोऽहं विभोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४४

स्वस्वरूपे ॥ जहति अजहति भाग त्याग लक्षणा कल्पना नास्ति ॥
अदृष्टोऽहं अलक्ष्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४५

स्वस्वरूपे ॥ पञ्चविध भ्रान्ति असंभावना विपरीत भावना नास्ति ॥
निस्त्रैगुण्योऽहं त्रिचिन्त्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४६

स्वस्वरूपे ॥ भूत भविष्य वर्तमान केवल महा अत्तिकाल नास्ति ॥
निरंजनोऽहं विशोकोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४७

स्वस्वरूपे ॥ भूत भविष्य वर्तमान त्रिविध प्रतिबंध किंचित् नास्ति ॥
निराधारोऽहं निर्भयोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४८

स्वस्वरूपे ॥ आरंभ परिणाम विवर्त अजातादिवादोऽपि नास्ति ॥
विशुद्धोऽहं विरहोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ४९

स्वस्वरूपे ॥ न्यायादि सांख्ययोग पूर्व उत्तर मीमांशा शास्त्रोऽपि नास्ति
निरवद्योऽहं विमलोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ५०
स्वस्वरूपे ॥ परा पश्यन्ति मध्यमा वैखरी वाणाकी कल्पनाऽपि नास्ति ॥
निरुपमोऽहं विजरोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ५१

स्वस्वरूपे ॥ व्यावहारिक प्रतिभाषिक पारमार्थिक सताऽपि नास्ति ॥
निराभासोऽहं निःसंगोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ५२
स्वस्वरूपे ॥ व्यावहारिक प्रतिभाषिक पारमार्थिक जीवोऽपि नास्ति ॥
अस्वरोऽहं अव्यंजनोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥५३
स्वस्वरूपे ॥ गुरुशास्त्र शिष्यबोध प्रतिपादक प्रतिपाद्यता नास्ति ॥
निरवधीऽहं निर्गुणोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥सच्चि.॥ ५४
स्वस्वरूपे ॥ जीवेश्वरद्वैत शास्त्रीय अशास्त्रीयद्वैत कल्पना नास्ति ॥
निर्विकारोऽहं निष्कलंकोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि.॥ ५५
स्वस्वरूपे ॥ व्यष्टि समष्टिभेद कार्यकारण भेदकी कल्पना नास्ति ॥
निरपेक्षोऽहं निर्लोभोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि ॥ ५६
स्वस्वरूपे ॥ अवच्छेद प्रतिबिंब आभासादी वादकी कल्पना नास्ति ॥
निःसंकल्पोऽहं स्वयंभोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि ॥ ५७
स्वस्वरूपे ॥ असत् आत्म अन्यथा अनिर्वचनीयख्याति किंचित् नास्ति ॥
निरहंकारोऽहं भूमाऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ५८
सच्चिदानन्द घन स्वरूपोऽहं विज्ञानमानन्दं ब्रह्मस्वरूपोस्मि

स्वस्वरूपे ॥ अनवय व्यतिरेक आधार आधेय भावोऽपि नास्ति ॥
अकामोऽहं अक्रोधोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःस्दि्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ५९

स्वस्वरूपे ॥ नित्यानित्य सत्यासत्य आत्मानात्मभाव कल्पना नास्ति.
अनाद्योऽहं अनन्तोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ६०

स्वस्वरूपे ॥ बाधसामानाधिकरण मुख्यसामानाधिकरण नास्ति ॥
अविक्रियोऽहं अचलोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६१

स्वस्वरूपे ॥ स्वरूपाध्यास संबंधध्यास कल्पित संबंधोऽपि नास्ति ॥
अशब्दोऽहं अस्पर्शोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६२

स्वस्वरूपे ॥ अद्वेष्टादि अमानीत्वादि ज्ञानं प्राक्षिके साधन नास्ति ॥
अरूपोऽहं अरसोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ६३

स्वस्वरूपे ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय द्रष्टा दर्शन दृश्यादि त्रिपुटी नास्ति ॥
अगंधोऽहं अगम्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६४

स्वस्वरूपे ॥ संचित क्रियामाण इच्छा अनिच्छा परेच्छा प्रारब्ध नास्ति ॥
विचिकित्सोऽहं विपापोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६५

स्वस्वरूपे ॥ ऋचो यजुः सामादिवेद ब्रह्मसूत्र पुराणादि नास्ति ॥
अस्थूलोऽहं अशीर्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६६

स्वस्वरूपे ॥ जीवेश्वर माया तम भेद भाग त्यागे अभेदोऽपि नास्ति ॥
पुरुषोत्तम स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ६७

स्वस्वरूपे ॥ सापेक्ष निरपेक्ष व्याप्यता दृष्टिसृष्टिवादोऽपि नास्ति ॥
अदेशोऽहं ॥ अकालोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ६८
स्वस्वरूपे ॥ परोक्षापरोक्ष ज्ञानं शोक नाश हर्षादि अवस्था नास्ति ॥
अवस्नोऽहं अपरिच्छेद्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ६९
स्वस्वरूपे ॥ भूला तूलाऽज्ञान भावाऽभाव अत्यंताऽभाव किंचित् नास्ति ॥
अवाच्योऽहं अवेद्योऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ७०
स्वस्वरूपे ॥ लय विक्षेप कषाय रसास्वाद योग विघ्नोऽपि नास्ति ॥
अव्यपदेश्योऽहं विभोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ७१
स्वस्वरूपे ॥ हठयोग राजयोग मंत्रयोग लययोगोऽपि नास्ति ॥
कूटस्थोऽह चिन्मात्रोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ७२
स्वस्वरूपे ॥ आतमा ब्रह्म प्रत्यगात्मा परमात्मा नामकी कल्पना नास्ति ॥
अखंडैकरस स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ७३
स्वस्वरूपे ॥ वृत्ति व्याप्ति फल व्याप्ति उन्मनी अवस्थाकी कल्पना नास्ति ॥
सदैकरसोऽहं भूमाऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचि. ॥ ७४
स्वस्वरूपे ॥ सामान्य विशेष अभि सामान्य विशेष ज्ञानं किंचित् नास्ति ॥
चिदैकरसोऽहं भूपाऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचिच. ॥ ७५
स्वस्वरूपे ॥ सामान्य चेतन विशेष वृत्त्याऽऽरूढ चेतनोऽपि नास्ति ॥
सदानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सचिच. ॥ ७६
सच्चिदानन्द घन स्वरूपोऽहं विज्ञानमानन्दं ब्रह्मस्वरूपोऽस्मि

स्वस्वरूपे ॥ नित्य प्राप्तिकी प्राप्ति नित्य निवृत्तिकी निवृत्ति किंचित् नास्ति ॥
अद्वैतानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ७७
स्वस्वरूपे ॥ विवेक वैराग्य शमादि षट् संपत्ति मुमुक्षुताऽपि नास्ति ॥
स्वरूपानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ७८
स्वस्वरूपे ॥ उपक्रम उपशंहार षड् विध लिंगोऽपि किंचित् नास्ति ॥
अव्यक्तोऽहं अलिंगोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि ॥ ७९
स्वस्वरूपे ॥ श्रवण मनन निदिध्यासनरूपी अभ्यासोऽपि नास्ति ॥
चिदानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८०
स्वस्वरूपे ॥ प्रमाणगत संशय प्रमेयगत संशय किंचित् नास्ति ॥
अनन्ताऽनन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८१
स्वस्वरूपे ॥ सविकल्प समाधि निर्विकल्प समाधिकी कल्पना नास्ति ॥
विशुद्धाऽनन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८२
स्वस्वरूपे ॥ अद्वैतभावना अद्वैतावस्थानरूपी समाधि नास्ति ॥
निजानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८३
स्वस्वरूपे ॥ त्रय साधन भूमिका चतुर्थ साध्य भूमिका किंचित् नास्ति ॥
शाश्वतानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८४
स्वस्वरूपे ॥ जीवन मुक्ति विदेह मुक्ति सरूप अरूप नाश नास्ति ॥
अखंडानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि. ॥ ८५

अखंडानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ८५

स्वस्वरूपे ॥ तत्वज्ञान मनोनाश वासना क्षयकी कल्पना नास्ति ॥
भूमानन्द स्वरूपोहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरुपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ८६

स्वस्वरूपे ॥ अहंब्रह्मास्मि तत्वमस्यादि महावाक्यकी कल्पना नास्ति ॥
परमानन्द स्वरुपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ८७

स्वस्वरूपे ॥ दृष्टा श्रोता मन्ता विज्ञानात्मा साक्ष्य साक्षी भाव किंचित् नास्ति ॥
कैवल्यानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ८८

स्वस्वरूपे ॥ पूर्णानन्द सच्चिदानन्द ब्रह्मानन्दादि नामोऽपि नास्ति ॥
ब्रह्मानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ८९

स्वस्वरूपे ॥ ध्येयाकार निर्विकार ब्रह्माकार वृत्योपि किंचित् नास्ति ॥
पूर्णानन्द स्वरूपोऽहं ॥ स्वात्माहि ब्रह्म स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोस्मि ॥ सच्चि.॥ ९०

इदं उद्‌गारो दृढाभ्यासे अज्ञानं नाश कृत्वा स्वस्वरूप दर्शायो ॥
स्वस्वरूपे समायो पूर्णानन्दस्वरूपे अनुभव मौन स्वरूपे स्वस्वरूपे शमायो ॥ ९१

ब्रह्माभ्यास जे करे होवहिं ब्रह्म स्वरूप ॥ अज्ञान नासे तिनको होवहिं शुध स्वरुप ॥
चलि पुतली लोणकी थाह सिंधुके लेन ॥ अनाथ आपहि भइ पलटि कहे कौन ॥

स्वरूपानु संधान रूपी उद्‌गारो सम्पूर्ण ॥

स्वस्वरूप स्वयं नमस्कारः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

व्याकरणादी दोषोकु सुधारके अभ्यास करना

॥ उसी उद्गारोका रहस्य और तत्व विचार ॥

सभी अधिकारीओने ॥ ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येति ॥ यह श्रुतिका विचार और वर्त्ताव सदैव करते रहना उत्तम मध्यम अधिकारीओने अभ्यासक्रममें लिखे अनुशार समज लेना और उत्तमोत्तम अधिकारीओने ऐसा विचार करनाकी इसी उदुगारोका विरोधी उदुगारो हमारेमें भयाहि नहीं है तो हमारे उसी उदुगारोका चिन्तवन करनेसें कया प्रयोजन है कुछ नहीं क्योंकी उसी उदुगारो हमारे स्वरूपको प्रतिपादन करतें हैं तो हम किसका चिन्तवन करें और जैसे सूर्यभगवानमें प्रतिबिंब भयाहि नहीं है परंतु हम लोकोने कल्पना कर लिया है दूसरेकी कल्पनासें सूर्यभगवानको हानि लाभ कुछ नही है इसीमें वानरोने कल्पेहुवे अग्निका दृष्टांत समज लेना तैसे स्वस्वरूपमें यह माया और मायाका कार्य प्रपंच भयाहि नहीं है परतु हम लोकोनें अविचारसें स्वस्वरूपका विस्मरण करके यह मीथ्या प्रपंचकी कल्पना कर लिया है जैसे स्वप्नमें राजा भिखारी नहि होता हैं तैसें हमारी कल्पनासें स्व स्वरूपमें विकार नही होता है और रविकी रस्मि समेटिके करि गुंथी रूचिमाल, पहरी वंध्याको तनुशोभा वनी रसाल ॥ शशेशृंगको धनुस करी गधंत पुरूप चल्यो जाय, माल देखी लालच लगी पुनी पुनी मागत तांय ॥ वहमांगत यहदेत नहि वढो परस्पर रार ना कछुं भयो न हे वैसो हे संसार ॥ मृग तृष्णाके नीरले सिच्यो नभ अम्भोज, तासु गंध आई सरस यहविधि जग खोज ॥ गधन सिंधुकी लहरीले आल वनायो धाम ऐसे पूरण ब्रह्ममें देखो जगत अभिराम उसीके समान यह प्रपंचको समज लेना और वशिष्ट भगवानने श्री रामचद्रजीको कहा हैं की यह जगत् भयाहि नहीं है परंतु तुम्हारी कल्पना सें भासता हे वास्तविक नहीं है और भगवान गौडपादाचार्यने माण्डूक्योपनिषत्‌की कारिकामें कहा है की

न निरोधो न चोत्पत्तिर्न वद्धो च न साधकः।
न मुमुक्षर्न वै मुक्त इत्येसा परमार्थता ॥

न कश्चिज्जायते जीवः सम्भवोऽस्य न विद्यते ।
एतत्तदुत्तमं सत्यं यत्र किञ्चिन्न जायते ॥
स्वतो वा परतोवाऽपि न किञ्चिद्वस्तु जायते ।
सदसत्सदसद्वाऽपि न किञ्चिद्वस्तुजायते ॥

उस कारिकाके श्लोकोसें ऐसा निश्चय हुवाकी ब्रह्म स्वरूपमें किंचित मात्रभी द्वैत प्रपंच भयाहि नहीं है और जैसें आकाशमें अविचारसें नीलता भासती है तैसें अविचारसे स्व स्वरूपमें अज्ञानरूपी प्रपंच भासतें हैं इस लिए विद्यारण्य स्वामीजीने पंचदशीमें कहा है की

तस्मात् सदा विचारयेत् जगज्जीव परात्मनः ।
जगज्जीव भाव बाधे स्वात्माहि आशिवष्यते ॥

भगवान वशिष्टने कहा है की

॥ विचारहि परम् ज्ञानं ॥

और भगवान श्री शंकराचार्यनें कहा है की

नोत्पद्यते विना ज्ञानं विचारेणान्य साधनैः ।
यथा पदार्थभानं हि प्रकाशेन विना क्वचित् ॥

कार्यं कारणता याता कारणेन हि कार्यता: ।
कारणत्वं ततो गच्छेत्कार्याभावे विचारत: ॥

इस लिये सदैव स्व स्वरूपका विचार हि करना और कहां तक विचार करना, उसका नियम नहीं है परंतु जहां तक भ्रांती है तहां तक विचारभी है भ्रांतीकी निःपेश निवृत्ति होनेसें विचार आपहि निवृत्त होवेंगे और विचाररूपी वृत्तिकी विस्मृती होनेपर स्व स्वरूपका अनुभव होवैंगा और जैसे सदा प्रकाससमान सूर्यभगवानमें अंधकार है हि नहीं तैसे सदा विज्ञान स्वरूपमें अज्ञान तत्कार्य प्रपंच है हि नहीं क्योंकी सदा विज्ञान स्वरूपसें स्फूरायमान होइ रहा हुं इस लिए हमारे स्वरूपका विस्मरण भी नहीं है तभी स्वस्वरूपका चिन्तवन करनेका क्या प्रयोजन है, कुछ नहीं ऐसा विचार करनेसें और वासनारूपी प्रतिबंध निःपेश दूर होनेसें और विचारोकी दृढतासें जभी दृढ निश्चय पूर्वक अनुभव हो जाय उसीका नाम स्वानुभव स्वरूप स्थिति है ॥ यह अनुभवको अनुभवी हो जाने आगे मौन रहना हे श्रुति भगवति कहती है कि ॥ यतो वाचो निवर्तन्ते ॥ अप्राप्य मनसा सह ॥

स्व स्वरूपको स्वयं नमस्कार

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

उपसंहार

अभेददर्शन परमहंसदसा स्वस्वरूप स्थितिका सूत्ररूपसें कथन

मेराअहं सो तेराअहं ॥ तेराअहं सो मेराअहं

हम सो तुम तुम सो हम ॥ हमतुममे भेदहिकींन (कुछनहि)

परमहंसदसा

कीडेयंमति युक्तस्य ॥ जाग्रदाऽपि सुषुप्तिवत् ॥

चेष्टते वालवत् ज्ञानी ॥ ब्रह्मानन्देन तोषित ॥

जाग्रत मांहि सुषुप्ति ॥ मतवारेके केल ॥

करे चेष्टा वाल ज्यों ॥ आतम सुख रह्यो खेल ॥

दिगंबर स्वरूप बालोन्मत्त पिसाचवत्त स्थिति ॥

स्वस्वरूप स्थिति

संशान्त सर्वसंकल्प ॥ यस्यशिलावत् स्थिति ॥

जाग्रद् निद्रा विनिर्मुक्त ॥ सास्वरूप स्थितिः परा ॥

वृत्ति व्याप्तिफल व्याप्तिबिना ज्योंके त्यों स्वरूप ॥

सदोदित स्वयं प्रकास है मनवाणी भिन स्वरूप ॥

विज्ञाता रमरेकेन विजानीयात ॥ विज्ञाता स्वरूप ॥

हिअस्ति ॥ स्वानुभव स्वरूपे स्वतःसिद्ध स्थितोऽस्मि ॥

नेह नानास्ति किंचन ॥ नान्यत किंचन मिषत ॥

यतोवाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसासह इतिश्रुति ॥

स्वस्वरूपं स्वयं नमस्कार ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

छपावी प्रसीद्ध कर्ता:—

देशाई भीमभाई मोहनभाई एन्जीनीअर सगरामपुरा, सुरत.

छापनार:— मणीलाल भगवानदास

श्री मोदेश्वर प्रि. प्रेस, बरानपुरी भागळ, सुरत.